Impact Factor : 6.125

ISSN : 2395 - 5104

शब्दार्णव Shabdarnav

International Peer Reviewed Referred Journal of Multidisciplinary Research

Year 8 Vol. 16, Part-I July-December, 2022

Scientific Research
Educational Research
Technological Research
Literary Research
Behavioral Research

Editor in Chief
DR. RAMKESHWAR TIWARI

Executive Editors
DR. KUMAR MRITUNJAY RAKESH
MR. RAGHWENDRA PANDEY

Published by
SAMNVAY FOUNDATION
Mujaffarpur, Bihar

- लैंगिक असमानता में "बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ" अभियान का महत्व — 223–226
  प्रदीप कुमार विश्वकर्मा
- हिन्दी कहानी में वृद्धों का नवीन पीढ़ी के साथ सामंजस्य — 227–230
  प्रो0 जे विजया भारती
- भारतीय भाषा विश्लेषण में स्फोटवाद की समीक्षा — 231–235
  राकेश कुमार
- भारतीयदर्शनशास्त्रदिशा बन्धस्वरूपविचारः — 236–238
  रामपदरायः
- कालिदाससाहित्ये प्रेमभावनायाः अभिव्यक्तिः — 239–242
  सत्यकाम आर्यः
- मिवारप्रतापम् और प्रतापविजयम् नाटकों में समाहित कल्पना — 243–246
  सत्य नारायणः
- श्रीमन्दिरेशशतकम् – एकमध्ययनम् — 247–250
  Sourav Das
- बौद्ध दर्शन का डॉ0 भीमराव अम्बेडकर पर प्रभाव — 251–254
  शैलेश कुमार
- पाणिनीयव्याकरणे परिभाषाः — 255–257
  श्री. सुब्रह्मण्यभट्टः
- वर्तमानसमाजे क्लेशनिवारणे सांख्ययोगयोः भूमिका — 258–261
  सुचोमिता मालाकारः
- हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् — 262–264
  सुधीरप्रसादनौटियालः
- शान्ति शिक्षा में स्वामी विवेकानन्द जी का योगदान — 265–270
  सुदीप बाजखॉ
- वैयाकरणभूषणसारविषयाणां विहंगावलोकनम् — 271–274
  सुलग्ना सेनापति
- पंचतन्त्रानुसारं मानवीयमूल्यानि — 275–278
  Suparna Mondal
- भारतीय नवजागरण के परिप्रेक्ष्य में महर्षि अरविन्द घोष के राष्ट्रवाद सम्बन्धी अवधारणा — 279–282
  Swapna Aush
- पुराणविमर्शः — 283–289
  विद्याकरमिश्रः
- 'प्रतिमानाटकम्' में राजधर्म स्वरूप विमर्श — 290–293
  विष्णु कुमार
- संस्कृतसाहित्यस्य महत्त्वप्रतिपादनम् — 294–296
  डॉ0 अनिरूद्ध कुमार पाण्डेय
- पुरुष वर्चस्व की जकड़न और स्त्री प्रेम की विवशता–कानों में कंगना — 297–300
  डॉ0 रमेश यादव
- सामवेदीय गोभिल और खादिर गृह्यसूत्र में बलिहरण कर्म — 301–303
  हिमांशु बर्मण
- वैश्विक महामारी कोरोना का सामाजिक प्रभाव एक विश्लेषण — 304–307
  पल्लवी कुमारी

Shabdarnav : An International Peer Reviewed Refereed Research Journal | ISSN - 2395-5104
वर्ष–8, अंक–16, भाग–1, जुलाई–दिसम्बर, 2022 | Impact Factor : 6.125

हिन्दी कहानी में वृद्धों का नवीन पीढ़ी के साथ सामंजस्य

प्रो. जे विजया भारती*

प्राचीन भारतीय समाज में संयुक्त परिवार अधिक हुआ करते थे। ऐसे परिवारों में वृद्धों को सर्वोच्च स्थान प्राप्त होता था। हर महत्वपूर्ण विषय केलिए अन्य परिवार जन अपने परिवार के वृद्ध सदस्यों से विचार विमर्श किया करते थे और उन्हीं के विचारों का पालन भी किया करते थे। परिवार के बाल सदस्य अपने दादा-दादी, अथवा नाना-नानी से कथाएँ सुना करते थे। घर के बुजुर्गों के साथ बच्चों का संबंध अत्यंत घनिष्ठ हुआ करता था। नैतिक मूल्यों की शिक्षा वही से आरम्भ होती थी।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में सम्मिलित परिवारों के प्रति असंतोष बढ़ने लगा है। परिवार का प्रत्येक सदस्य अपने वैयक्तिक विचारधारा के अनुरूप जीवन व्यतीत करने के प्रति उत्सुक हैं तदनुसार प्रयासरत भी हैं। जिसके कारण पारिवारिक संबंधों का विघटन होने लगा है। सब अपना अलग बसेरा बसाने के प्रति तत्पर हैं। चालीस सदस्यों का भरा-पूरा परिवार चार-चार सदस्यों के छोटे-छोटे परिवारों के रूप में विघटित होकर संकुचित हो गया है। तत्कारण घर-परिवार के बुजुर्गों का अनादर होने लगा है। उनकी उपेक्षा की जाने लगी है। इस प्रकार के अनपेक्षित वातावरण में वृद्ध घुटन महसूस करने लगे हैं। ऐसे में कयी वृद्ध मौन रूप से अपने परिवार के सदस्यों का अत्याचार सहने में बाध्य हो रहे हैं। परंतु कुछ अन्य वृद्ध अपने आत्मसम्मान की रक्षा करते हुए आश्रमों की ओर अपने कदम बढ़ा रहे हैं।

मुन्शी प्रेमचन्द जी के द्वारा लिखित कहानी "बूढ़ी काकी" एक ऐसी वृद्धा की कहानी है जो अपने पति और पुत्र को खो देने के पश्चात भतीजे के भरोसे अपनी सारी संपत्ति उसके नाम कर अपमान सहते हुए घुट-घुट कर जी रही होती है। कहानी को आरम्भ करते हुए प्रेमचन्द जी वृद्धों की स्थिति के बारे में बड़ी ही अच्छी बात कही है- "बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनरागमन हुआ करता है।[1]" काकी न ही ठीक से देख सकती थी और न ही ठीक से चल फिर सकती थी। केवल जिह्वा स्वाद ही उनका एकमात्र दुर्बलता थी। वृद्धावस्था में अक्सर शारीरिक दुर्बलताएं उन्हें घेर लेती हैं। उनकी नज़र कमज़ोर पड़ जाती है। काकी की स्थिति भी कुछ ऐसी ही थी पर खाने की बड़ी शौकीन थी। बालक अपनी मनपसंद वस्तु न मिलने के कारण जिस प्रकार हठ करने लगते हैं, उसी प्रकार काकी खाने के समय पर न मिलने अथवा पर्याप्त मात्रा में खाना न मिलने पर ऊंचे स्वर में रो कर अपनी बात या यों कहिए कि अपनी व्यथा व्यक्त करने लगती थी।

संपत्ति लिखवाते समय भतीजे बुद्धिराम ने बड़े-बड़े वादे तो किये थे पर काकी को पेट भर भोजन भी नहीं मिल पता था। अपने संबंधियों की बातों में आकर वृद्ध अगर अपनी सारी संपत्ति पहले ही उनके नाम दर्ज कर दें तो वृद्धावस्था असहनीय बन पड़ती है। संपत्ति अपने नाम कराने तक उनका व्यवहार बड़ा ही शालीन रहता है पर जब संपत्ति उनके नाम पर बन जाए तो अपनी असलियत पर उतर आते हैं। बुद्धिराम ने भी काकी के साथ वही किया। अपने जीवन साथी और एकमात्र संतान को खो देने के बाद काकी अपनी सारी संपत्ति भतीजे बुद्धिराम के नाम कर देती है ताकि उनका संरक्षण सही प्रकार हो सके लेकिन बुद्धिराम और उसकी पत्नी रूपा यदा कदा काकी पर चिल्लाते रहते। उनके लड़के भी माता पता के नक्शे कदम पर चलते हुए काकी को

*हिन्दी विभाग, आन्ध्र विश्वविद्यालय, विशाखापट्टनम, आन्ध्र पदेश

सताया करते। "कोई चुटकी काटकर भागता, कोई उन पर पानी की कुल्ली कर देता।"[२] संपूर्ण परिवार में बुद्धिराम की बेटी लाडली को ही काकी के प्रति अनुराग था।वह अपने भाइयों से बचकर मिठाई खाने काकी के पास जाया करती थी और उनके पास बैठकर खुद खाया और काकी को खिलाया करती थी।

बुद्धिराम के बेटे सुखीराम का तिलक था और घर में उत्सव का वातावरण था। विविध प्रकार के व्यंजन बनवाये जा रहे थे। रूपा इन सब में व्यस्त थी।घी और मसालों की क्षुधावर्द्धक सुगंध चारों ओर फैली हुई थी।[३] खाने की शौकीन काकी कमरे में बैठकर सोच रही थी कि कोई खाना लेकर अभी तक आया क्यों नहीं, रोना चाहती थी पर अपशकुन समझकर रो नहीं पाती। घर परिवार का कोई महत्वपूर्ण विषय हो या विशेष उत्सव का आयोजन करना हो तो परिवार के बुजुर्गों से सलाह लिए जाते थे। लेकिन यहाँ काकी के संपत्ति के कारण समाज में गौरव प्राप्त करने वाले बुद्धिराम और रूपा काकी का अनादर करते हैं।

घर परिवार का कोई महत्वपूर्ण विषय हो या विशेष उत्सव का आयोजन करना हो परिवार के बुजुर्गों से सलाह लिए जाते थे। लेकिन यहाँ काकी के संपत्ति के कारण ही समाज में गौरव प्राप्त करने वाले बुद्धिराम और रूपा काकी का अनादर करते हैं और यह जानते हुए भी कि काकी खाने के कितना शौकीन है, समय पर उन्हें खाना नहीं भेजते और दो बार जब काकी अपने आप को नियंत्रित न कर पाने के कारण बाहर जाती है तो एक बार रूपा से और दूसरी बार बुद्धिराम से झिड़किया पाती है। बुद्धिराम ने तो हद ही कर दी काकी के दोनों हाथ पकड़ कर उन्हें घसीटते हुए ले जाकर कोठरी में फटक दी।

लाड़ली इन सबसे अप्रसन्न थी। वह सोच रही थी कि सबसे पहले काकी को खिला देते तो क्या होता। महमान सारे चले गये। ट घर में सब के सो जाने के बाद कुछ पूड़िया लिए लाड़ली काकी के पास चुपके से जाती है। उन से पेट नहीं भरा तो काकी बोली"मेरा हाथ पकड़ कर वहाँ ले चलो जहाँ महमानों ने बैठकर भोजन किया।"[४]

काकी जूठे पत्तलों से पूडियों के टुकड़े चुन- चुन कर खाने लगी। उसी वक्त रूपा की आंख खुली काकी और लाड़ली को जूठे पत्तलों के पास देखकर करुणा और भय से उसकी आंखें भर आयी और कहा"परमात्मा! मेरे बच्चों पर दया करो। इस अधर्म का दण्ड मुझे मत दो,नहीं तो हमारा सत्यानाश हो जाएगा।"[५] कहते हुए काकी से माफी मांगी और यह सोचते हुए कि जिसके कारण आज कुछ रूपये हर महीने प्राप्त हो रहे हैं, उन्हीं के साथ यह अधर्म कैसे हुआ, थाली भर पकवान लाकर उन्हें देती है।

बूढ़ी काकी बच्चों की भांति सब भुलाकर खाना खा रही होती है।"उनके एक- एक रोंए से सच्ची सदिच्छाएं निकल रही थी।"[६] काकी परिवार जनों से चाहे कितनी भी परेशान हुई हो, वह अपने बच्चों केलिए अच्छे की ही कामना करती हुई दिखाई देती है।

बाल शौरि रेड्डी जी की कहानी "शान्ति के पथ पर" में ऐसे वृद्ध का चित्रण हुआ है जिन्हें पूरा परिवार का सम्मान तो प्राप्त होता रहा है, परन्तु वृद्धावस्था में जिस शांतिपूर्ण वातावरण की आकांक्षा उन्हें थी,वह नहीं दे पाते हैं। वृद्ध ्दादाजी का पोता विश्वंभर तीन वर्ष अपनी उच्च शिक्षा केलिए विदेश गया हुआ था। वापस भारत आते समय अपने सारे परिवार से विशेषकर अपने दादाजी से मिलने केलिए उत्सुक था। बचपन की सारी बाते याद कर रहा था।"वह अधिकांश समय अपने दादाजी के साथ बिताता,उनकी गोद में बैठकर दादाजी के वात्सल्य के सागर में गोते लगाता और उनके मुँह से अनेक प्रकार की कहानियाँ सुनता। दादाजी के अनुभव

सुनते - सुनते उसके दिमाग में अनेक प्रकार के विचार हिलोरे मारने लगत।"[७] इन शब्दों के द्वारा कहानीकार रेड्डी जी यह बताते हैं कि घर के वृद्धों के सांगत्य में रह कर बच्चे मानसिक रूप से दृढ़ बनजाते हैं। उनकी सोचने - विचारने की शक्ति बढ़ जाती है।

विश्वंभर का स्वागत करने हवाई अड्डे पर दादाजी को छोड़ बाकी सब परिवार के जन आये हुए थे,लेकिन विश्वंभर की आंखें दादाजी को ढूंढ रही थीं। उन्हें वहाँ न पाकर व्यग्रता से अपने पिता जी से उसने पूछा कि कहीं दादाजी की तबियत तो ठीक नहीं है? पिताजी उसका उत्तर देते हुए कहते हैं कि "वे बिलकुल स्वस्थ हैं। उन्हें दुनियादारी से विरक्ति हो गयी है। वे अन्तरमुखी होकर शान्ति पाना चाहते हैं। परिवार में रहकर उन्हें वह शान्ति उपलब्ध नहीं हो रही है,वास्तव में उन्हें जिसकी खोज है। इसलिए आजकल वे पोरूर में स्थित 'सीनियर सिटिजन होम' में रह रहे हैं।"[८] यह सुनकर विश्वंभर उद्विग्न हो जाता है और यह जानने की कोशिश करता है कि कहीं घर पर उनके लिए सारी सुविधाएँ तो उपलब्ध नहीं करायी गयी? और वहाँ होम में उनकी देखबाल किस प्रकार हो पायेगी।इस पर पिता उन्हें स्वयं वहाँ जाकर पता लगाने की सलाह देते हैं।

अगले दिन सुबह ही विश्वंभर दादाजी से मिलने चला जाता है। कुशल - प्रश्न के पश्चात यह पूछने पर कि वे यहाँ क्यों आए? दादाजी कहते हैं "अब तो मेरा 'होम' यही हो गया। मैं ने अपनी इच्छा से इसे अपना'होम' बना लिया है जो बूढ़ों का होता है।"[९] पोते ने बहुत ही तर्क-वितर्क और अनुनय- विनय से दादाजी की दिल की बात जाननी चाही। दादाजी मकान,परिवार और रिश्तों की अहमियत के बारे में समझाते हैं और यह कहकर कुछ बातें टालने की कोशिश करते हैं कि तुम्हारी उम्र इन सब स्थितियों को समझने योग्य नहीं है, तो पोता कहता है कि बुजुर्ग होने के अधिकार से आप लोग इस पीढ़ी का मुँह बंद कर देते हैं। तो दादाजी सम्मिलित परिवार के महत्व को समझाते हुए कहते हैं कि आज हर कोई व्यक्तिवादी बनता जा रहा है।

इस कहानी में कहानीकार ने दादा और पोते के संवाद के ज़रिये मकान का सही अर्थ, परिवार और रिश्तों का महत्व, सम्मिलित परिवार के उपयोग आदि महत्वपूर्ण विषयों को पाठकों के समक्ष रख कर उन्हें सोचने पर मजबूर किया है।

वास्तव में देखा जाए तो वृद्धावस्था में व्यक्ति शांति और अनुशासन चाहता है। परिवार का मुखिया होने के नाते पूरे परिवार को अपने नियंत्रण में रखना चाहता है। और चाहता है कि अपने सारे अनुभवों से ग्रहित मान्यताओं को परिवार के सारे सदस्य भी अपनाये और उनके अनुसार चले। लेकिन नयी पीढ़ी को यह सब पुराने ढकोसले लगते हैं और आधुनिकता के नाम पर अपनी मनमानी करना चाहते हैं। दादाजी के साथ भी यही हो रहा था तो वे शांति की खोज में आश्रम पहुँच गए। ऐसे में परिवार से दूर रहना ही उन्होंने उत्तम और उचित समझा। दादाजी के इस कदर समझाने पर भी विश्वंभर बार- बार उन्हें घर वापस लौटने का आग्रह करता है तो वे घर की वास्तविक परिस्थितियों से अवगत कराते हैं। "मैं सोच- समझकर अपने नीड में आ गया हूँ। परिवार में मुझे किसी बात की कमी नहीं थी। मगर गृहस्थ होने के नाते हमारे घर सदा अतिथि व परिचित आया करते। बच्चे इतना शोरगुल मचाते हैं कि मेरे कान के पर्दे फट जाते हैं। उन पर नियंत्रण रखने की कोशिश करके मैं असफल हो गया। बहु को फिल्म देखने का बड़ा शौक है। टीवी, वीसीआर,और रेडियो की आवाज सदा गूंजती रहती। कभी ट्यूशन मास्टर, कभी आस पड़ोस की महिलाएँ कभी कुछ तो कभी कुछ लगा ही रहता है।"[१०] घर के अशांति पूर्ण वातावरण से वे दूर

रहना चाहते थे। वे अपने भीतर झांकना चाह रहे थे। सही मायने में आन्तरिक शांति पाना चाह रहे थे। इसलिए वे वृद्धाश्रम पहुँच गये।

उपरोक्त कहानियों से अवगत होता है कि वृद्ध अपने परिवार की सुख - संतुष्टि केलिए जीवन के अंतिम चरण में भी परिवार की ही परवाह करते हैं। प्रेमचंद जी के समय से लेकर रेड्डी जी के समय तक की शायद परिस्थितियाँ और परिवेश बदला है, सोच और कार्याचरण की पद्धति बदली है पर अपने परिवार के प्रति प्रेम और ममता की भावना वही है। अशिक्षित या अल्प शिक्षित, शारीरिक रूप से दुर्बल वृद्धा के मुँह से, अपने परिवार जनों से कयी बार अपमानित, अवहेलित होते हुए भी उनके लिए दिल से सच्ची सदिच्छाएं ही निकलती है। शिक्षित, सेवानिवृत्त वृद्ध, परिवार का मुखिया होते हुए भी उन पर अधिकार न जताते हुए उन्हें अपने तरीके से जीने की छूट दे कर वे स्वयं शांति की खोज में आश्रम को अपना घर बना लेते हैं।

संदर्भ सूची:

१. बूढ़ी काकी - हिन्दी कहानियाँ - डॉ॰ श्री कृष्ण लाल पृ. १०१
२. वही, पृ. १०२
३. वही, पृ. १०३
४. वही, पृ. १०८
५. वही, पृ. १०९
६. वही, पृ. १०९
७. शान्ति के पथ पर - बैसाखी - श्री बालशौरि रेड्डी- २१
८. वही, पृ. २२
९. वही, पृ. २४
१०. वही, पृ. २८